विशेषसूचना → १५ जनवरी 2022 तक 1 से 5 तक सभी उत्तर पत्रिका भेजे

श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

द्वितीय वर्ष - अभ्यास - १

जून-: २०२१

गुणांक - १००

प्रश्न - पत्र

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा। २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें। ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे। ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे। ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे। ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है। ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा। ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरुरी है।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. .....यानि सुदेव-सुगुरु, सुधर्म में अटूट सच्ची श्रद्धा।
२. देह रक्षा एवं..... के लिये श्रीवज्रपंजर स्तोत्र प्रचलित है।
३. गीतार्थ की बात न समझे और न स्वीकारे वो .....समान श्रावक है।
४. ..... यानि गलत मान्यताये, भ्रामक कल्पनाये।
५. वीर प्रभु को वाद में पराजित करने के बाद मैं..... बन जाऊंगा ऐसा इन्द्रभूति ने सोचा।
६. परमाधामी देव..... में बसते है।
७. ज्ञान, दर्शन, चारित्र के पालन करने योग्य आचारो का पालन न करे वो..... कहलाता है।
८. चोरस रुचक से ९०० योजन उपर और ९०० योजन नीचे.....आया है।
९. मन, वचन, काया की प्रवृति यानि.....।
१०. लोक के प्रत्येक विभाग को..... कहा जाता है।
११. मोक्षमार्ग..... के राजमहल में से गुजरता है।
१२. ..... यह पद प्रथम मंगलरुप होता है।
१३. सर्व क्रियाये यदि..... करने में आये तो पाप का बंध नहीं होता है।
१४. ..... नामक चौथा अतिचार जानना।
१५. श्रावक, श्रद्धावंत, विवेकवंत और..... होता है।
१६. मैं जिनेश्वर प्रभु के..... दर्शन करुंगा।
१७. सोमिल ब्राह्मण के यहां ग्यारह पंडितो का शिष्य परिवार..... का था।
१८. मनुष्य का जन्म, मरण..... में ही होता है।
१९. औदारिक, वैक्रिय, आहारक और तैजस वर्गणा..... परिणामी है।
२०. आत्मा के गुण को ढंकना, वो कर्म के स्वभाव को..... कहा जाता है।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो - १५

१. समान प्रदेशो के बने हुए स्कंध समूह क्या कहलाते है ?
२. इन्द्रभूति गौतम का जन्म कौनसे नक्षत्र में हुआ था ?
३. कौनसा क्षेत्र चक्रवर्ती को जीतने योग्य होता है ?
४. श्रावक के बारह व्रतो का मूल क्या है ?
५. चूहा बिल्ली को क्या करने दौड आया है ?
६. नवकारमंत्र बाहर की चारो दिशाओं में किसके जैसा है ?
७. श्रावक के वार्षिक अवश्य आचरण करने योग्य कर्तव्य का वर्णन किसमें समझाया है ?
८. उर्ध्वलोक कौनसे आकार का है ?
९. इन्द्रभूति ने भगवान महावीर को कैसे प्राणी के रुप में संबोधित किया है ?
१०. कहलाता है श्रावक, पर श्रावक योग्य गुण न हो उसे क्या कहा जाता है ?
११. साधु-साध्वी का मलीन शरीर देखकर दुर्गंच्छा की हो तो वो कौनसा अतिचार है ?
१२. जैन दर्शन में जगत कैसा कहलाता है ?
१३. जृंभिका नगरी में समवसरण में प्रभु की प्रथम देशना के वक्त कौन हाजिर नहीं थे ?
१४. अन्य देवो की भक्ति करके उन्हें ही मुक्ति देने वाला मानना, यह कौनसा मिथ्यात्व है ?
१५. आत्मा के अरुपी गुण का आवरण करे वो कौनसा कर्म ?

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो - १०

१. श्रवंति २) दु ३) वप्रोपरि ४) जीएण ५) आसे ६) आयुध ७) चउव्विहा ८) आधिः ९) गोआणि
१०. सव्वमुं ११) वय १२) भुंजंतो १३) पडाग १४) दंसण १५) सव्वति १६) समायारी १७) कहंचरे

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B	A	B
१) श्रेणिकराजा	१) बौद्ध दर्शन	६) कांक्षा	६) द्रह
२) मुखवस्त्रिका	२) कर्मग्रंथ	७) कर्मविपाक	७) दर्शन श्रावक
३) वासना	३) अतिचार	८) नाना सरोवर	८) पितांबर
४) कामदेव	४) उत्सूत्र प्ररुपणा	९) अहाछंद	९) मध्यलोक
५) इन्द्रभूति	५) उत्तरगुण श्रावक	१०) ज्योतिष चक्र	१०) सिद्ध भगवान

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. कर्म की उत्तर प्रकृति कितनी ?
२. नवकारमंत्र के कितने पदो के साथ हमारे देह और आत्मा की रक्षा जोडने में आयी है ?
३. पुद्गलास्तिकाय के कितने भेद है ?
४. भगवान जिस क्षेत्र में विचरण करते हो वहां कितने योजन तक रोग नहीं होते ?
५. सूक्ष्म परिणामी वर्गणाये कितनी ?
६. अढीद्वीप में कितने अंतरद्वीप है ?
७. इन्द्रभूति गौतम कितने वेद-विद्याओ में पारंगत थे ?
८. उर्ध्वलोक में कितने किल्बिषिक देव है ?
९. नामकर्म के कितने भेद है ?
१०. श्राद्धविधि ग्रंथ में कितने द्वारो से श्रावक जीवन का रहस्य बताया गया है ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✓) हैं या गलत (×) बताओ - १०

१. श्रीवीतराग परमात्मा से अलग अपना मत प्रस्थापित करे वो निन्हव कहलाता है ।
२. अतिशय अंग की रक्षारुप ऐसे सिद्ध भगवंत को नमस्कार हो ।
३. कर्मपुद्गल के दलिक का माप वो प्रदेशबंध कहलाता है ।
४. जंबूद्वीप के उतरने के बडे उतार स्थानो को श्रेणी कहा जाता है ।
५. आठ प्रवचनमाता के धारक ऐसे सुसाधु को शुद्ध गुरुतत्व जानना ।
६. वीरप्रभु को केवलज्ञान हुआ तब ८४ इन्द्रों के सिंहासन कंपायमान हुए ।
७. गुरु की देशना बहुमानपूर्वक हृदय में धारण करे वो श्रावक दर्पण समान कहलाते है ।
८. जंबूद्वीप के आस-पास वलयाकार में कालोदधि समुद्र है ।
९. तिर्यंच, देव, मनुष्य वगैरह सर्व जीवो को पूजने योग्य प्रभु का पूजातिशय है ।
१०. आत्मा के साथ कर्मरुप में जुडने में उपयोगी होते पुद्गलो को मनोवर्गणा कहा जाता है ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - १०

१. कर्म बांधते वक्त योगअनुसार आत्मा कम-ज्यादा कर्मदलिको के समूह को आत्मा के साथ जोडता है ।
२. मूर्खो को कोई बना जाय पर इसने तो दवो को अपनी ओर ललचाया है ।
३. एक म्यान में दो तलवार नहीं रह सकती, एक गुफा में दो केसरीसिंह भी नहीं रह सकते ।
४. अपने जीवन की पाप-परंपरा का मूल कारण जयणा की कमी है ।
५. जो प्रमाद वश केवल देह का पोषण करते है और संयमीकरण में दुर्बल जैसे हो वो उसन्ना ।
६. विरति यह रथ है तो सम्यक्दर्शन उसका सारथी है ।
७. शुद्ध सम्यक्त्व द्वारा ही आत्मरुपी भूमि निर्मल हो सकती है ।
८. सती स्त्री का एक बार शील खंडित हो तो वो सती नहीं कहलाती है ।
९. पंचपरमेष्ठि के पदो से भय, आधि, व्याधि, मन की पीडा कभी भी होती नहीं है ।
१०. रसशास्त्र के जानकार से कौनसा रस अंजान होता है ?

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - १५

१. लोकोत्तर देवगत मिथ्यात्व । २) स्थानांग सूत्र अनुसार श्रावक के प्रकार । ३) रसबंध ।
४. वर्गणाये कितनी और कौनसी ? इसमें से आहारक और औदारिक वर्गणाये समझाइये ।
५. श्रीव्रजपंजरस्तोत्र की महत्ता ।

उत्तर पत्र नीचे लिखे पते पर भेजिए :
शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१ जिल्हा : जलगांव,
मो. ९०२८२४२४८४. सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.shatrunjayacademy.com